डॉ॰ संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज, आरा

अभिज्ञान शाकुन्तलम

चरित्र चित्रण : अनुसूया तथा प्रियम्वदा

⇒ महाकवि कालिदास विरचित अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाटक प्रेम के आदर्श के लिए विश्वप्रसिद्ध है। इस आदर्श के सम्यक निर्वाह के लिए जहाँ उन्होंने अनेक नवीन एवं सुन्दर प्रसंगों की भावना की है वहीं उन्होंने नवीन पात्रों की सृष्टि करके कथानक को अपनी उत्तम लक्ष्य की ओर उन्मुख किया है। शकुंतला की दो अंतरंग सखियाँ अनुसूया तथा प्रियम्वदा इसी मौलिक पात्रसृष्टि की देन है। जो अपनी चारित्रिक विशेषताओं एवं महत्वपूर्ण स्थिति के कारण साहित्य जगत में अमर हो गयी हैं। ये दोनों नाटकीय संविधान की दृष्टि से विशेष महत्व रखती हैं। साथ ही ये नायिका की अभिव्यक्ति एवं नाटक के फलागम की साधिका भी हैं।

अनुसूया तथा प्रियम्वदा दोनों सच्चे रूप में आदर्श सखियाँ हैं। शकुन्तला के प्रति दोनों का अगाध एवं निःस्वार्थ प्रेम है। दोनों नायिका के हित के सम्पादन में सतत प्रयत्नशील हैं। उसके लिए समान रूप से व्यवसाय एवं व्यवस्था करती हैं। दोनों में व्यवहारिक शिष्टाचार, मनोवैज्ञानिक कुशलता, विनयशीलता और मधुरभाषिता समान रूप से व्याप्त है। नायक-नायिका के पारस्परिक प्रेमप्रसंग को उनकी आकृति दर्शनमात्र से जान लेती हैं। अपनी व्यवहार कुशलता के कारण ही दुर्वासा जैसे आशु-क्रोधी

तपोवन को भी शाप रूपान्तर के लिए प्रसन्न कर लेती है। बुद्धिमानी से शाप वृतांत को अपने तक ही सीमित रखती है और प्रकृति पलवा सखि की रक्षा करती है। शकुन्तला के विदा वेला के अवसर पर दोनों ही अपनी सहवासिनी अभिन्न हृदया सखि के वियोग से व्याकुल हो उठती है —

'तात! शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव तपोवनं कथं प्रविशावः। अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः" — का उत्तर शकुन्तला के पास भी नहीं होता है।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के अनुशीलन से हम प्रियम्वदा तथा अनुसूया के कार्य व्यापारों एवं स्वभाव में अनेक समानताएँ पाते हैं। फिर भी सूक्ष्म निरीक्षण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इन दोनों के चरित्रों में अपनी कुछ व्यक्तिगत विशेषताएँ भी हैं —

प्रियम्वदा की तुलना में अनुसूया अधिक प्रौढ़, गम्भीर, चिन्तनशील एवं दूरदर्शिनी है। अपनी विवेक-शीलता एवं व्यवहार कुशलता के कारण ही वह आश्रम में पहुँचे अतिथि राजा दुष्यंत का स्वागत करती है। और 'कतम आर्येण राजर्षिशोऽलंक्रियते' इत्यादि वाक्यों से परिचय पूछती है। अपने कर्तव्य का सदैव ध्यान रखने वाली अनुसूया महर्षि कण्व द्वारा सौंपी गई अतिथि सत्कार रूप दायित्व का बोध शकुन्तलता को कराती हुई कहती है कि — हला शकुन्तला। गच्छोटजम। फलमिश्र-मर्घमुपहर।

विपरीत परिस्थिति में उचित परामर्श देनेवाली अनुसूया चक्रवाकी के प्रसंग से उत्कण्ठित शकुन्तला को 'एवाऽपि प्रियेण बिना गमयती रजनी विषाददीर्घतरां गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः सहयति' कहकर अपनी मत्यानुसार शान्त करती है।

स्पष्टतः अनुसूया का इस नाटक में महत्वपूर्ण स्थान है उसमें मानवमति की प्रधानता है जिसके अनुसार उसके चरित्र का निर्माण होता है। उलझन पैदा होने पर शकुन्तला और प्रियम्वदा उसी के मति के अनुसार कार्य करती है।

अनुसूया में दूरदर्शिता भी खूब है। वह शकुन्तला के भविष्य के लिए भी चिन्तित है। राजा के प्रेम का निश्चय हो जाने पर भी वह बहुवल्लभ राजा से वचन लेती है – परिग्रहबहुत्वेऽपि द्वे प्रतिष्ठे कुलस्यनः। अनुसूया धैर्यसम्पन्न धीर युवति है। दुर्वासा शाप को सुनकर वह धैर्य नहीं खोती है अपितु प्रियम्वदा को शापनिवृत्ति का उपाय सोचकर प्रियम्वदा को दुर्वासा के पास भेजती है। साथ ही उसे इस घटना को गोपनीय रखने की बात करती है। इसके अतिरिक्त प्रियम्वदा द्वारा यह पूछने पर कि क्या महर्षि कण्व दुष्यंत एवं शकुन्तला के गान्धर्व विवाह को स्वीकृति प्रदान करेंगे तब अनुसूया विश्रब्ध होकर कहती है – वे इस विवाह का समर्थन करेंगे क्योंकि – गुणवते कन्या का प्रतिपादनीया इत्ययं तावत् प्रथमः संकल्पम्। तं यदि दैवमेव सम्पादयति नन्वप्रयासेन कृतार्थो गुरुजनः।

इसके विपरीत प्रियम्वदा यथा नाम तथा गुण के सिद्धान्त के अनुसार परिहासशीला एवं मधुरभाषिणी है। वनज्योत्सना की देखभाल करने के विषय में कहती है कि शकुन्तला वनज्योत्सना को इसलिए इतना अधिक देख रही है कि जिस प्रकार वनज्योत्सना को अनुरूप वृक्ष मिल गया है ऐसे ही मैं भी अनुकूल वर प्राप्त करूँ – यथा वनज्योत्सनानुरूपेण पादपेन सङ्गता, अपिनामैव मह्ममपया-मनोज्ञरूपं वरं लभेयेति।" विनोदी स्वभाव होने के कारण प्रियम्वदा समय-समय एवं शालीनता का ध्यान नहीं रखती है। राजा के पूछने पर वैखानसं किमनया व्रतमा

प्रदानाद् व्यापारोऽपि मदनस्य निर्वेवितव्यम्" तो उसने उत्तर रूप में कहा कि "गुरोः पुनरस्या अनुरूपवर प्रदाने संकल्पः।" प्रियम्वदा का यह उत्तर सुनकर जब शकुन्तला वहाँ से जाने लगी तो प्रियम्वदा रोकने के लिए कहती है — हला। न ते युक्तं गन्तुम्, यत् वृक्षसेचने द्वे धारयसि मे। "एहि तावत्। आत्मानं मोचयित्वा ततो गमिष्यसि। यह रोकने का अत्यन्त ही सुन्दर एवं विनोदपूर्ण ढंग है। दुर्वासा जैसे आशु क्रोधी तपोधन को भी उसने अपनी वाकपटुता से झुका ही लिया — किमपि पुनः सानुक्रोशः कृतः।

विनोद प्रियता ही नहीं, प्रियम्वदा में अनोखी सूझबूझ भी है। शकुन्तला के भावों तथा शारीरिक चेष्टाओं को देखकर संशय में पड़ी अनुसूया को बताती है कि वह कामदोष से पीड़ित है — "अनुसूये। तस्य राजर्षेः प्रथमदर्शनादारभ्य पर्युत्सुकेन शकुन्तला। किं न खलु तस्या स्तन्निमित्तोऽयमातङ्को भवेत्। वह राजा के भावों को समझकर एवं उसके अनुभावों को देखकर वह उसका मदनताप जान लेती है। साथ ही यह राजाधिकारी नहीं वस्तुतः राजा दुष्यंत है — इसका भी प्रथम संकेत उसी ने दिया — "मोच्यितास्यनुकम्पिमार्येण अथवा महाराजेन।

प्रियम्वदा को शकुन्तला से अनन्य प्रेम है और वह उसके मन के अनुकूल ही आचरण करती है। राजा से शकुन्तला का प्रणय निवेदन सर्वप्रथम वही करती है।

सच है प्रियम्वदा न केवल रति है, अपितु ~~कुरूप~~ कूटनी है और प्रेम भी। कौन सा ऐसा कार्य है, जिसका उसके पास समाधान न हो।

इससे स्पष्ट है कि अनुसूया एवं प्रियम्वदा अपने अपने प्रेम में विशिष्ट महत्त्व रखती है। दोनों एक दूसरे की पूरक है। अनुसूया की उपयोगिता संकट में है तो प्रियम्वदा की प्रेम प्रसंग में है।